22

ऊर्ध्वलिङ्गी - प्रागैतिहासिक सम्प्रदाय

कैलाश चन्द्र पाण्डेय

भारतीय प्रतिमा विज्ञान में लकुलीश ऊर्ध्वलिङ्ग आचार्य के रुप में जाने जाते हैं। प्रश्न है कि क्या ऊर्ध्वलिङ्गी सम्प्रदाय लकुलीश और वेदों से भी पूर्व विद्यमान था? ऊर्ध्वलिङ्ग लकुलीश पर डी.आर.भांडारकर,[1] डॉ.वी.एस.पाठक,[2] डॉ.राधावल्लभ सोमानी,[3] तथा एम.सी.चौबे[4] ने अपनी लेखनी चलाई है; लेकिन किसी ने भी ऊर्ध्वलिङ्गी सम्प्रदाय के अस्तित्व को ताम्राश्मकाल से जोड़ने का प्रयास नहीं किया है। भारतीय प्रागैतिहासिक भित्ति चित्रों में अनेकों चित्र ऐसे हैं जिनके अध्ययन से इसकी प्राचीनता प्रागैतिहासिक काल से जोड़ी जा सकती है।

ताम्राश्मयुगीन शैलचित्रों में नागौरी (जि.रायसेन, म.प्र.) से दो चित्र मिले हैं जिनमें दो मानव ऊर्ध्वलिङ्गी दिखाये गये हैं (चित्र 1)। प्रथम चित्र सादी रेखा के द्वारा अंकित है जबकि दूसरे चित्र में अद्‌भुत शरीर वाले पुरुष का नृत्यरत अंकन है।[5] सतकुण्डा (जि.रायसेन, म.प्र.) में 60 से.मी. आकार के एक मानव का चित्रण किया गया है। इस मानव का लिङ्ग (चित्र 2) धरती को छूता हुआ दिखाया गया है।[6] ऐसा ही एक चित्र जो 1 मीटर 5 से.मी. आकार का है मूलताई (अमरावती,) महाराष्ट्र के समीप मिला है, जिसमें दीर्घ ऊर्ध्वलिङ्ग युक्त एक मानवाकृति का चित्रण है।[7] गोबस्तान (अजरबैजान) में 5000 ई.पू. का युग्म शैलउत्कीर्णन मिला है जिसमें एक शाखा को पुरुष लिङ्ग के प्रतीक के रुप में चित्रित किया गया है (चित्र 3)।[8]

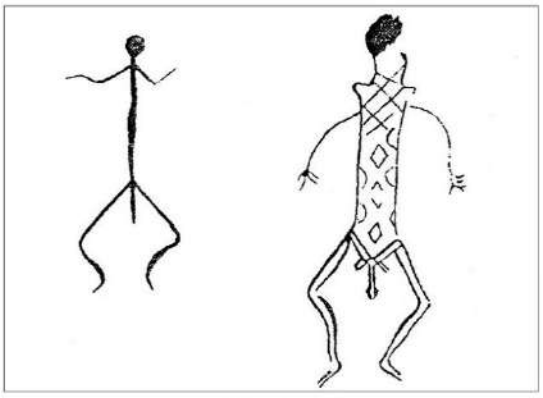

चित्र 1

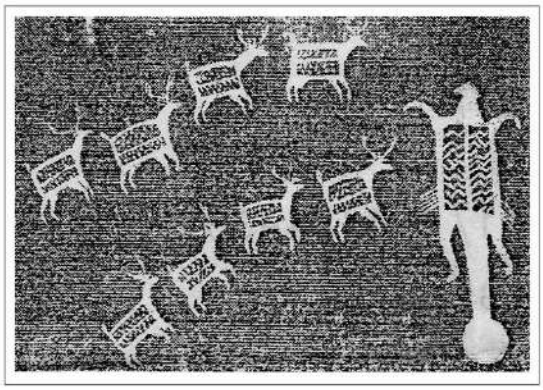

चित्र 2

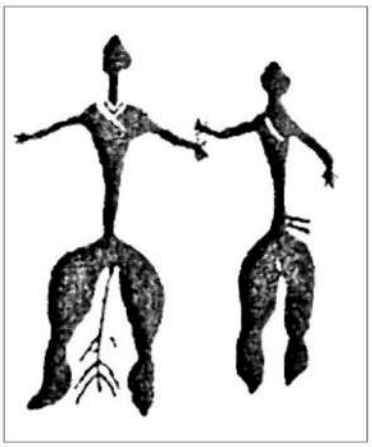

चित्र 3

जाओरा (जि.रायसेन, म.प्र.) में ऊर्ध्वलिङ्गियों का एक बड़ा समूह चित्रित है जिसमें ऊपर दो ऊर्ध्वलिङ्गी गतिमान मुद्रा में अंकित हैं (चित्र 4)। बाँयी ओर एक गर्भवती स्त्री का अंकन है। तीसरी चौथी पंक्ति में भी इसी प्रकार के अंकन है जबकि पाँचवीं पंक्ति में तो एक व्यक्ति विपरीत दिशा में ऊर्ध्वलिङ्ग का प्रदर्शन कर रहा है।[9]

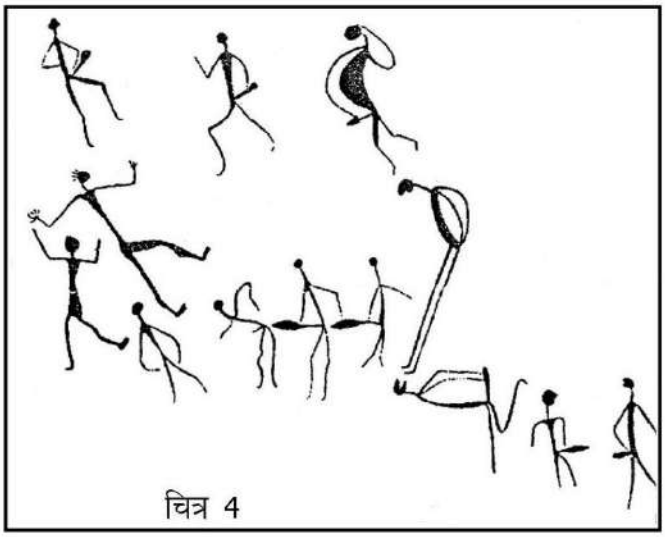
चित्र 4

रायसेन जिले के कटोरिया में तो ऊर्ध्वलिङ्गियों को आमने-सामने प्रदर्शित किया गया है (चित्र 5)। बाँयी ओर एक पुरुष का लेटे हुए अंकन है।[10] संभवतः ऊर्ध्वलिङ्गियों में लिङ्ग प्रदर्शन संबंधी प्रतियोगिताएँ आयोजित होती होंगी। इसी

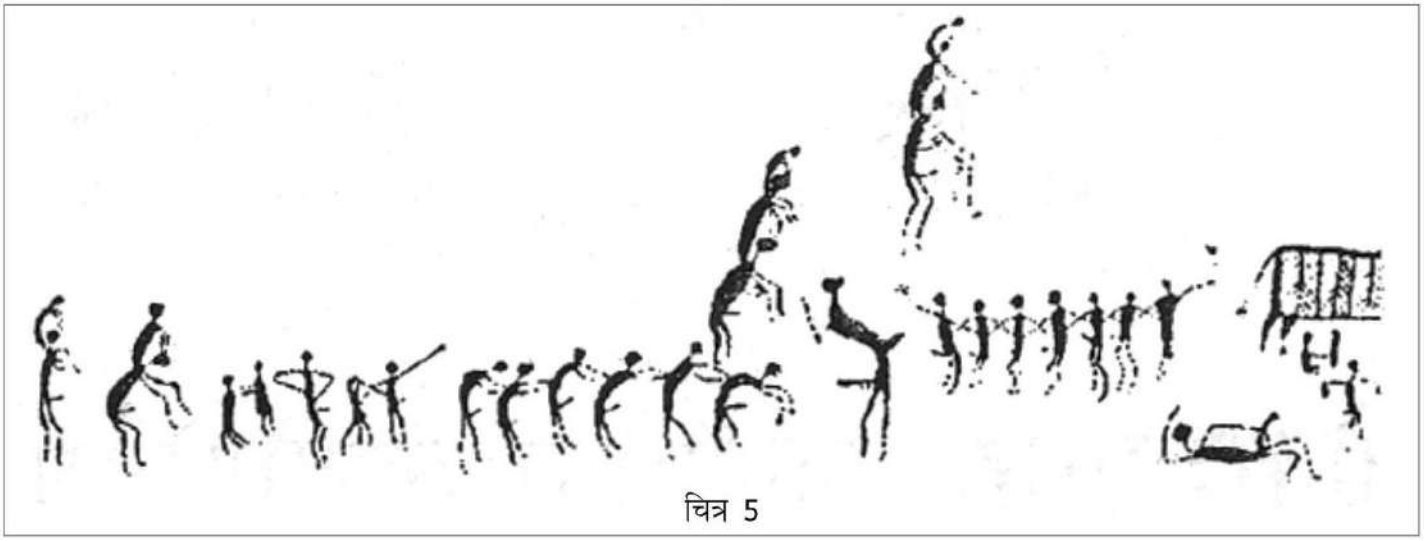
चित्र 5

स्थान पर ऊर्ध्वलिङ्गी सम्प्रदाय के एक जुलूस का चित्रण है (चित्र 6)। जिसके प्रारंभ में दो ऊर्ध्वलिङ्गी मुक्केबाजी का प्रदर्शन कर रहे हैं। तत्पश्चात् इनके पीछे दो महिलाएँ एक लकड़ी पर तीन घड़ियाल टांगे चल रही है। जिनके पीछे एक ऊर्ध्वलिङ्गी कन्दुक खेल का प्रदर्शन कर रहा है। साथ ही एक आचार्य अपने बृहत्लि के साथ एक पीठ पर विराजमान है। ऊर्ध्वलिङ्गी परिचारक पीछे खड़ा है। नीचे जुलूस की भव्यता का आनंद ले रहे दो ऊर्ध्वलिङ्गी प्रमुदित मुद्रा में हैं। अन्तिम भाग में रथ का अंकन है जिसके अश्वों को रस्सियों से नियंत्रित किया गया है। एक आकृति चौपायों को हाँक रही है।[11]

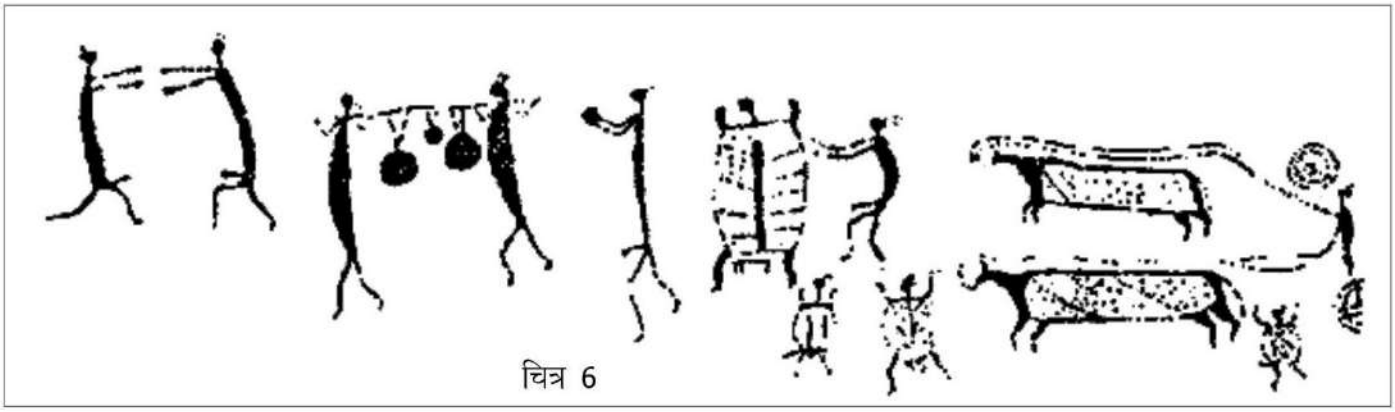
चित्र 6

ऊर्ध्वलिङ्गी कभी-कभी कोई पारलौकिक अनुष्ठान भी करते थे (चित्र 7)। चतुर्भुजनाथ (भानपुरा, जिला मंदसौर, म.प्र.) में ऐसे ही चित्र का अंकन मिला है। डॉ.लोथार वॉके (आस्ट्रिया) के अनुसार इस चित्र में पुरुष जननांग को भूमि तक अंकित किया गया है। इस चित्र की दाहिनी ओर दो अन्य बड़ी आकृतियाँ बनी हैं, जिनमें एक पुरुष पैर फैलाकर दाहिने हाथ पर एक पक्षी को लेकर बैठा है, तथा उसके सामने दूसरा पुरुष खड़ा है जिसके लम्बे सींग पर एक नन्हा सा बालक बना है। डॉ.वॉके का मत है कि इस चित्र में प्रागैतिहासिक युग में मनुष्य की मृत्यु व उसके पुनर्जन्म संस्कार का प्रतीकात्मक चित्रण हुआ है।[12]

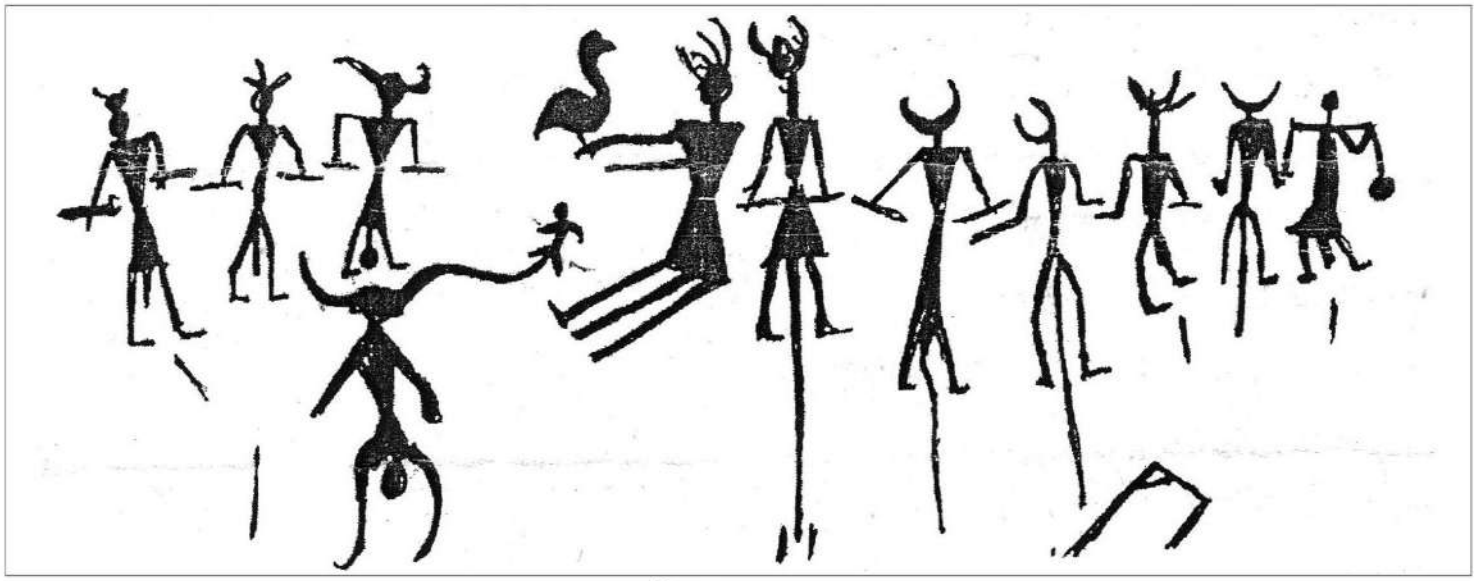

चित्र 7

ऊर्ध्वलिङ्गी सामूहिक मैथुन प्रिय होते थे। चिब्बरनाला (भानपुरा जि.मंदसौर) से प्राप्त एक शैलचित्र (21x5.5 से.मी.) में मैथुनरत आकृति प्रदर्शित है। कई ऊर्ध्वलिङ्गी प्रतीक्षा में खड़े हैं (चित्र 8)।[13] ताम्राश्मकालीन इन चित्रों का अध्ययन करने से स्पष्ट है कि इस काल में समाज में एक ऐसे वर्ग का अस्तित्व था जो ऊर्ध्वलिङ्ग को प्रधानता देते थे।

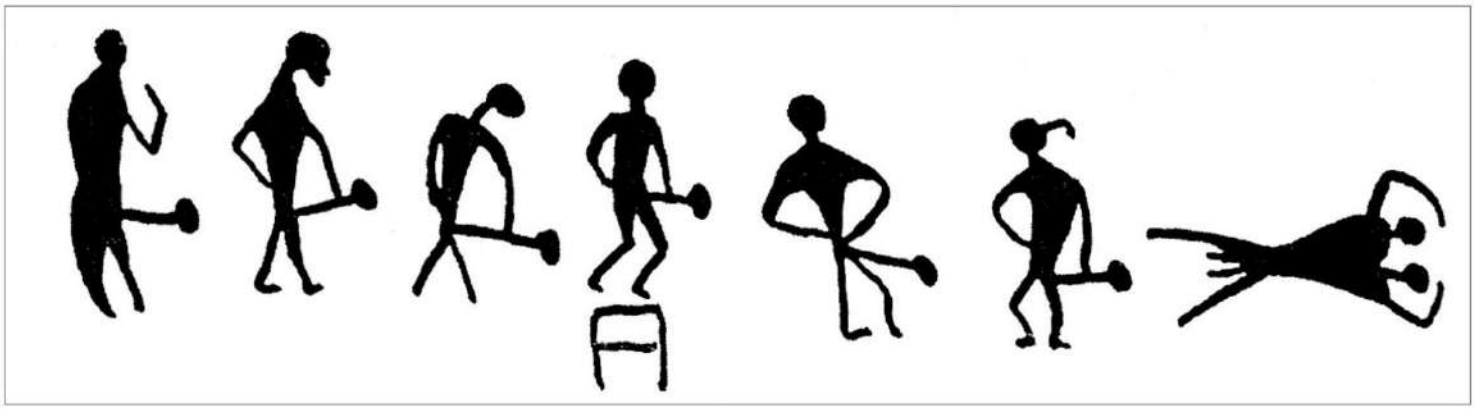

चित्र 8

ऋग्वेद में शिश्न पूजकों को घृणा की दृष्टि से देखा गया है। ये निश्चित रुप से अनार्य थे क्योंकि इनके साथ दासों का उल्लेख है। शिश्नपूजक दस्यु का वध किया जा सकता था, अथवा दास बनाया जा सकता था।[14] रुद्र इनका देवता था। रुद्र के अनुयायी कपर्दी (जटाजूटधारी), शिपिविष्ट (सर्वथा नग्न) और विकृत रुप के होते थे। यजुर्वेद में रुद्रों के लिए 'कामचारी' शब्द का प्रयोग हुआ है। अतः गृहस्थों ने इनसे चमड़ा पहनकर आने की

प्रार्थना की है - ''हे सर्वाधिक कामपूरक सर्वश्रेष्ठ कल्याण कारिन् हमारे लिए मन में सद्भाव रखते हुए शिव बनो। अपने आयुध को वटादि महान् वृक्ष पर रखकर, कृत्ति (चमड़ा) पहने हुए आओ।''[15]

भारत में परिवार के मूल के संबंध में अनेक भारतीय विद्वानों की धारणा है कि अन्य देशों की भांति यहाँ भी विवाह संस्था का उदय कामाचार से हुआ।[16] महाभारत में पाण्डु के वचन,[17] दीर्घतमा की कथा[18] तथा कर्ण के वचन[19] इसके प्रमाण माने जाते हैं। श्वेतकेतु की माता को गण गोत्र के अधिकारानुसार एक ब्राह्मण संभोग के लिए जबर्दस्ती पकड़कर ले गया। श्वेतकेतु के विरोध करने पर उसके पिता ने कहा कि यही सनातन रीति है।[20]

इस प्रकार शैलचित्रों के अध्ययन से स्पष्ट है कि ऊर्ध्वलिङ्गियों का एक सम्प्रदाय महाभारत की रचना के पूर्व प्रतिष्ठित हो चुका था। यह सम्प्रदाय अवैदिक था अतः आर्यों के समाज में अमान्य था। इस सम्प्रदाय के पहले देवता रुद्र थे जिनकी यजुर्वेद में व्याजस्तुति की गई है। आगे चलकर इस सम्प्रदाय का नेता 'पशुपति' हुआ। महाभारत काल में 'पशुपति' के मन्दिर होने के प्रमाण मिलते हैं। जरासंध ने पशुपति के मंदिर में ही छियासी राजाओं को कैद करके रखा था। इनकी संख्या सौ होने पर वह उन्हें मार डालता। 'पशुपति' के देवालय में नरबलि की प्रथा थी। पशुपति सम्प्रदाय ही आगे चलकर 'पाशुपत' कहलाया जिसका उल्लेख महाभारत के शांतिपर्व में है।[21] 'शिव' इस सम्प्रदाय के नेता हुए। आर्यों और अनार्यो का यह संघर्ष ऊर्ध्वलिङ्गियों के रुप में चलता रहा। शिव से जुड़े विभिन्न पुराणों में इसके संदर्भ मिलते हैः

(I) शिवपुराण में यह कथा आती है कि ऋषियों ने शिव पर क्रोध किया और उन्हें शाप दे दिया, जिससे उनके लिङ्ग के नौ टुकड़े हो गए। शिवपुराण के आधार पर ही हिन्दू शिव का प्रसाद खाना निषिद्ध मानते हैं।[22]

(II) वामनपुराण में वर्णित है कि महादेव नग्नवेश में नवीन तापस का रूप धर कर मुनियों के तपोवन में आये। मुनिगण की पत्नियों ने देखकर उन्हें घेर लिया। मुनिगण अपने ही आश्रम में अपनी पत्नियों की ऐसी अशोभनीय कामातुरता देखकर 'मारो-मारो' कहते हुए काष्ठ पाषाण आदि लेकर दौड़ पड़े।[23] इस समय शिव ऊर्ध्वलिङ्गी थे अतः मुनियों ने प्रहारकर उनके ऊर्ध्वलि को निपातित किया।[24]

(III) कूर्मपुराण (300-600 ई.) में एक कथा है कि पुरुष वेशधारी शिव, नारी वेशधारी विष्णु को लेकर देवदारु वन में विचरण कर रहे थे। उन्हें देखकर मुनि पत्नियाँ कामातुर होकर निर्लज्ज आचरण करने लगी। मुनिगण मारे क्रोध के शिव की अतिशय निष्ठुर वाक्यों से भत्सर्ना करने और शाप देने लगे।[25] आगे चलकर इसी पुराण में महादेव के नकुलीश्वर अवतार लेने का उल्लेख मिलता है।[26] इसी प्रकार की जानकारी 'शिवपुराण' से भी होती है।[27]

निष्कर्ष रूप में यह सिद्ध होता है कि ऊर्ध्वलिङ्गी एक ताम्राश्मयुगीन सम्प्रदाय था। आगे चलकर इसके अनुयायियों के नेता 'रुद्र' हुए। पशुपति के नेतृत्व में इस सम्प्रदाय ने अपना स्थान कायम कर लिया। अतः वेदव्यास द्वारा इनकी गणना 'पाशुपत' के रूप में की गई। इसी ऊर्ध्वलिङ्गी सम्प्रदाय का शिव ने नेतृत्व किया। लकुलीश आगे चलकर शिव के अवतार रुप में प्रख्यात हुए।

सन्दर्भ

1. जनरल बम्बई ब्रांच रायल एशियाटिक सोसायटी, VOI.XXII, पृ. 156, आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इंडिया रिपोर्ट, वर्ष 1907.
2. नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष 63, अंक 3-4, पृ.338.
3. ऐतिहासिक शोध संग्रह, हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर

4- Lakulīśa in Indian Art and Culture, Sharda Publishing House, Delhi, 1997

5- Erwin Neumayer, Pre-historic Indian Rock Paintings, Pls. 91-92, Delhi, 1983.

6. उपरोक्त, प्लेट 111
डॉ.श्याम कुमार पाण्डेय ने इसे उड़ती हुई चिड़िया (ऐतिहासिक काल) बताया है देखिये -
S.K. Pandey, Indian Rock Art, Pl. 55, Aryan Book International, New Delhi, 1993.

7- Vijay Ingole, "Discovery of Painted Rock Shelters from Satpura Tapti Valley," PURAKALA., page 207, volume 17:157, RASI, Agra, 2007.

8. ए मैनुअल अनाति, दीवार पर लिखावट (शोध लेख), यूनेस्को, दूत, पृ.16 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली, जून 1988

9- Erwin Neumayer, पूर्वोक्त, प्लेट 113 है। लेखक ने इसे Homosexual activity कहा है।

10. उपरोक्त, प्लेट क्र.118

11. प्लेट क्र.119

12. डॉ. लोथार वॉके, 'चतुर्भुजनाथ में एक विचित्र चित्र' (शोध लेख), प्रेरणा (शालेय पत्रिका) सम्पादकः कैलाश चन्द्र पाण्डेय, भाग 4, पृ.23, उ.मा.वि,.मंदसौर, 1984-1985।

13. मैकडानेल, हिस्ट्री आफ संस्कृत लिट्रेचर, पृ.115; वैदिक इन्डेक्स, भाग 2, पृ.382

14. असुर इण्डिया, पृ.16; रांगेय राघव, प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास, पृ.17, दिल्ली 19531.

15. यजुर्वेद 16, 25-51 विश्वबंधु (सम्पादक) वेदशास्त्र संग्रह, पृ.212-18, साहित्य अकादमी, दिल्ली 2001

16. के.पी.जायसवाल, मनु एण्ड याज्ञवल्क्य, पृ.224-25, डॉ.ए.एस.अल्तेकर, दी पोजीशन ऑफ वुमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, पृ.33-36, बनारस, 1938; जयचंद विद्यालंकार, भारतीय इतिहास की रुपरेखा, भाग I, पृ.201.

17. अनावृताः किल पुरा स्त्रियाः आसन् वरानने
कामचार विहारिण्यः स्वतंत्रताश्चारुहासिनि।।
नाधर्मोऽभूद्वरारोहे स हि धर्मः पुराऽभवत्। (महाभारत 1/122/3-21)

18. महाभारत 1/104/34-36।

19. महाभारत 8/40/35-36।

20. रांगेय राघव, पूर्वोक्त पृ.170।

21. सांख्य योगः पाञ्चरात्रं वेदाः पाशुपतम्।

22. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृ.54, दिल्ली 1956।

23. क्षोभं विलोक्य मुनयः आश्रमे तु स्वयोषिताम्।
हन्यतामिति संभाष्य काष्ठपाषाणपाणयः। - वामन., 43/70।

24. पातयन्तिस्म देवस्य लिंगमूर्ध्वं विभीषणम् - वामन., 43/71।

25. अतीव परुषं वाक्यं प्रोचुर्देवं कपर्दिनम्।
शेपुश्च शापैर्विविधैः मायया तस्य मोहिताः। - (सन्दर्भ अनुल्लेखित)

26. महादेवावताराणि कलौ श्रुणुतु सुव्रत। - कूर्मपुराण, मोरप्रति 53.1
महामायो मुनिः शूली डिण्डमुण्डीश्वरः स्वयम्।
सहिष्णु सोमशर्म्माच नकुलीश्वर एच च।।
वैवस्वतेन्तरे शम्भोरवतारास्त्रिशूलिनः
अष्टविंशतिराख्याता ह्यन्ते कलियुगे प्रभो।
तीर्थे कायावतारे स्याद्देवेशो नकुलीश्वरः। - कूर्मपुराण, 53.9-10

27. दिव्यां मेरुगुहांपुण्यां त्वयां साद्वर्चविष्णुना।
भविष्यामि तदा ब्रह्मलकुलीनाम नामतः।।
कायावतार इत्येव सिद्धक्षेत्रं परं तदा।
भविष्यति सुविख्यातं यावद् भूमि धारिष्यति।। - शिव पुराण, तृतीय, शतरुद्र संहिता श्लोक 47-50।